

Powerfully Purposed Transformation

Joe T. Green

Accepting God's Identity for You is Everything---Following Jesus into God's Kingdom---and surrendering to His Lordship Today---This is God's formula for changing mankind, revealing His will for your life, and winning the war for your soul.

Romans 12:2 KJV

(2) And be not conformed to this world: but be ye transformed by the renewing of your mind, that ye may prove what is that good, and acceptable, and perfect, will of God.

Copyright © 2021

All Rights Reserved. This book may not be copied or reprinted for commercial gain or profit. SKJV-King James Version of the Bible from; Published 1769; public domain

AMPC-Amplified Bible (classic); Copyright © 1954, 1958, 1962, 1964, 1965, 1987, by The Lockman Foundation.

English to Hindi has been translated by Copilot and ChatGPT. Mistakes can be made in translation. Check the English for author's exact meaning.

Hindi Scripture quotations are from the public-domain Hindi Bible text. Used for reference from their parallel Bible.Pixabay License

Free for commercial use

No attribution required

Lion

Lamb

Alexandra Stockmar

Efrakmstocher

Divider Flourish Image by Gordon Johnson from Pixabay

English Prologue

This is not a new teaching, or even a teaching, although everyone learns as they travel. I am attempting to show the pathway God laid out for human beings in the Garden of Eden and the path Jesus took so we could follow Him back into God's presence as citizens in His Kingdom. If you are tired of boring lectures without power, life, or destiny?

The Kingdom of God is here. The kingdom is still full of joy, peace,
and excitement in today's world.

It is not God's future plan, but rather today's agenda. Therefore, the Lord is accepting volunteers to join the kingdom's goal of establishing the mindset of His kingdom in the hearts of believers today.

If you identify as a Christian, live with the hope of attaining Heaven, and believe you will be raptured out of the current cultural war, you have become a victim of the devil's schemes and a party to their success. He always wants you to delay accepting the things of God until it is too late for them to affect the world we live in today. Discover what Satan is stealing from you today.

Because Jesus has finished all things needed for life and Godliness, our family, city, state, country, and world's future depends upon our recognizing, believing, claiming, and living in all of the things of God today, not tomorrow.

God has established our identity

as His child at the cross.

A willing and obedient heart is all it takes to live, move, and have your being, identity, and destiny in God. Therefore, passionately strive to establish a true legacy for your children. Without any exaggeration, I can say, enter at the risk of being forever changed!

Hindi Prologue

यह कोई नई शिक्षा नहीं है, और न ही वास्तव में कोई शिक्षा है, हालाँकि हर व्यक्ति यात्रा करते समय कुछ न कुछ सीखता ही है। मैं केवल वह मार्ग दिखाने का प्रयास कर रहा हूँ जो परमेश्वर ने आदम और हव्वा के लिए अदन की वाटिका में रखा था, और वह मार्ग जिस पर यीशु चले ताकि हम उनका अनुसरण करते हुए फिर से परमेश्वर की उपस्थिति में, उनके राज्य के नागरिक बनकर प्रवेश कर सकें। यदि आप शक्तिहीन, नीरस, और उद्देश्यहीन उपदेशों से थक चुके हैं—

परमेश्वर का राज्य यहाँ है।

आज की दुनिया में भी यह राज्य आनंद, शांति, और उत्साह से भरा हुआ है। यह परमेश्वर की भविष्य की योजना नहीं है, बल्कि आज का कार्य है। इसलिए प्रभु आज ऐसे स्वयंसेवकों को बुला रहे हैं जो विश्वासियों के हृदयों में उनके राज्य की मानसिकता स्थापित करने के लक्ष्य में शामिल होना चाहते हैं।

यदि आप स्वयं को मसीही मानते हैं, स्वर्ग प्राप्त करने की आशा में जीते हैं, और मानते हैं कि आप वर्तमान सांस्कृतिक युद्ध से रैपचर होकर बाहर ले जाए जाएँगे, तो आप शैतान की चालों के शिकार बन चुके हैं और उसकी योजनाओं की सफलता में सहभागी हो रहे हैं। वह हमेशा चाहता है कि आप परमेश्वर की बातों को स्वीकार करने में देर करें—इतनी देर कि वे आज की दुनिया पर प्रभाव न डाल सकें। जानिए कि शैतान आज आपसे क्या छीन रहा है।

क्योंकि यीशु ने जीवन और भक्ति के लिए आवश्यक सब कुछ पूरा कर दिया है, इसलिए हमारे परिवार, शहर, राज्य, देश और दुनिया का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि हम आज—कल नहीं—परमेश्वर की बातों को पहचानें, विश्वास करें, दावा करें, और उनमें जीवन जिएँ।

परमेश्वर ने क्रूस पर हमारी पहचान अपने बच्चों के रूप में स्थापित कर दी है।

एक इच्छुक और आज्ञाकारी हृदय ही पर्याप्त है ताकि आप परमेश्वर में अपना जीवन, गति, अस्तित्व, पहचान और नियति पा सकें। इसलिए अपने बच्चों के लिए एक सच्ची विरासत स्थापित करने के लिए पूरे मन से प्रयास करें। बिना किसी अतिशयोक्ति के मैं कह सकता हूँ— प्रवेश करें, इस जोखिम के साथ कि आप हमेशा के लिए बदल सकते हैं!

Table of Contents

English Prologue.....	4
Hindi Prologue.....	6
The Kingdom.....	10
English Section 5.....	10
English Section 6.....	12
Hindi Section 5.....	14
Hindi Section 6.....	14

The Kingdom

English Section 5

There are many different religions in the world today. However, God is not religious and will not respond to those activities. But there is a union conceived in Heaven, called a government, that God wanted to implement in mankind on earth. Therefore, God has chosen to join Himself to man in this dirt suit, the human body, as His temple.

The purpose is to manifest the nature of our Father God and rule the earth as His kings and priests. God's goal is to return the original rule given to Adam and lost by him. The manifestation of this union emanating from us is God's glory. Therefore, any area where God has exclusive expression and rule is Heaven. This arrangement fulfills the requirements of any kingdom: the ruler, the ruled, and the domain he rules that God establishes within us and will be within us forever.

Heaven is not a future destination for our souls,
but rather the manifestation of a relationship
our soul establishes now.

It accompanies us even after the death of our bodies.

In Luke 11:2, Jesus tells us to pray that His kingdom would come to us.

Luke 11:2 KJV

And he said unto them, When ye pray, say, Our Father which art in heaven, Hallowed be thy name. Thy kingdom come. Thy will be done, as in heaven, so in earth.

The Kingdom of Heaven is not a promise for tomorrow for those God is saving. Instead, it is a benefit for the king's children in His kingdom today.

Please pray the following:

Our Father, who is in Heaven, I ask that you establish your kingdom in me. The Bible declares that giving us the kingdom was your good pleasure. I believe that you have kept your word, and I ask that it become a reality in my life. Therefore, I command all restrictions and barriers hindering the manifestation of the Kingdom of God in me to be broken down and destroyed. I desire to live under the canopy of your will and the power of your love; this describes heaven. Abba Father, I have come to do thy will. In Jesus' name, amen.

English Section 6

God gave us the exclusive rule of the earth. That means only someone in a human body has authority here. Jesus was God in a dirt suit. However, if we need God's assistance, we must ask. Prayer is necessary to make God's help legal, for He does not want to live our lives for us; He wants to partner with us.

The family unit was given to us by God as a place to practice His rule. Our first assignment is to become rulers over our bodies. If you can rule yourself, you are ready to begin learning to rule the family, followed by ruling the world. If you cannot rule yourself with a godly rule, you will never be qualified to rule the earth.

Perfecting many small things through deliberate, godly practice and combining them until they become part of your identity will result in a wealthy life. The basis of kingdom ruler ship is such practices. Practice, practice, practice generates and cements our identity in Him.

Hindi Section 5

आज दुनिया में बहुत-से अलग-अलग धर्म हैं। परन्तु परमेश्वर धार्मिक नहीं है और वह उन धार्मिक गतिविधियों का उत्तर नहीं देता। लेकिन स्वर्ग में एक ऐसी एकता की योजना बनाई गई थी—एक शासन—जिसे परमेश्वर मनुष्य के माध्यम से पृथ्वी पर लागू करना चाहता था। इसलिए परमेश्वर ने मनुष्य के इस मिट्टी के शरीर, अर्थात् मानव शरीर, को अपना मन्दिर बनाकर स्वयं को उससे जोड़ने का चुनाव किया।

इसका उद्देश्य यह है कि हम अपने पिता परमेश्वर के स्वभाव को प्रकट करें और पृथ्वी पर उसके राजा और याजक के रूप में शासन करें। परमेश्वर का लक्ष्य वह मूल अधिकार वापस लाना है जो आदम को दिया गया था और जो उसने खो दिया। हमारे भीतर से प्रकट होने वाली इस एकता का परिणाम परमेश्वर की महिमा है। इसलिए जहाँ भी परमेश्वर की पूर्ण अभिव्यक्ति और शासन होता है, वही स्वर्ग है। यह व्यवस्था किसी भी राज्य की आवश्यकताओं को पूरा करती है—शासक, शासित, और वह क्षेत्र जहाँ वह शासन करता है—जिसे परमेश्वर ने हमारे भीतर स्थापित किया है और जो सदा हमारे भीतर रहेगा।

स्वर्ग हमारी आत्मा के लिए भविष्य का कोई स्थान नहीं है, बल्कि वह एक संबंध की अभिव्यक्ति है जिसे हमारी आत्मा अभी स्थापित करती है। यह हमारे शरीर की मृत्यु के बाद भी हमारे साथ रहता है।

लूका 11:2 में, यीशु हमें सिखाते हैं कि हम प्रार्थना करें कि उसका राज्य हमारे पास आए।

Luke 11:2

2 उस ने उन से कहा; जब तुम प्रार्थना करो, तो कहो; हे पिता, तेरा नाम पवित्र माना जाए, तेरा राज्य आए।

स्वर्ग का राज्य उन लोगों के लिए कल का वादा नहीं है जिन्हें परमेश्वर बचा रहा है, बल्कि यह आज उसके राज्य में राजा के बच्चों के लिए एक लाभ है।

कृपया निम्नलिखित प्रार्थना करें:

हे हमारे पिता, जो स्वर्ग में हैं, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप अपना राज्य मुझमें स्थापित करें। बाइबल कहती है कि हमें राज्य देना आपका अच्छा उद्देश्य था। मैं विश्वास करता हूँ कि आपने अपना वचन पूरा किया है, और मैं प्रार्थना करता हूँ कि यह मेरे जीवन में वास्तविकता बन जाए। इसलिए, मैं उन सभी बाधाओं और रुकावटों को टूटने और नष्ट होने का आदेश देता हूँ जो मेरे भीतर परमेश्वर के राज्य की अभिव्यक्ति को रोक रही हैं। मैं आपकी इच्छा की छाया और आपके प्रेम की शक्ति के अधीन जीवन जीना चाहता हूँ; यही स्वर्ग का वर्णन है। अब्बा पिता, मैं आपकी इच्छा पूरी करने आया हूँ। यीशु के नाम में, आमीन।

Hindi Section 6

परमेश्वर ने हमें पृथ्वी पर विशेष अधिकार दिया है। इसका अर्थ है कि केवल मानव शरीर में रहने वाला व्यक्ति ही यहाँ अधिकार रखता है। यीशु परमेश्वर थे, जो मिट्टी के शरीर में आए। परन्तु यदि हमें परमेश्वर की सहायता चाहिए, तो हमें माँगना होगा। प्रार्थना आवश्यक है ताकि परमेश्वर की सहायता वैध हो सके, क्योंकि वह हमारे जीवन को हमारे स्थान पर जीना नहीं चाहता; वह हमारे साथ साझेदारी करना चाहता है।

परिवार की व्यवस्था हमें परमेश्वर ने दी ताकि हम उसके शासन का अभ्यास कर सकें। हमारा पहला कार्य है—अपने शरीर पर शासन करना सीखना। यदि आप स्वयं पर शासन कर सकते हैं, तो आप परिवार पर शासन करना सीखने के लिए तैयार हैं, और उसके बाद संसार पर शासन करने के लिए। यदि आप स्वयं पर परमेश्वर के तरीके से शासन नहीं कर सकते, तो आप कभी भी पृथ्वी पर शासन करने के योग्य नहीं होंगे।

छोटी-छोटी बातों को जानबूझकर, परमेश्वर के तरीके से अभ्यास करते हुए सिद्ध करना, और उन्हें मिलाकर अपने व्यक्तित्व का हिस्सा बना लेना—एक समृद्ध जीवन का परिणाम होता है। राज्य के शासन का आधार

ऐसे ही अभ्यास हैं। अभ्यास, अभ्यास, अभ्यास—यही हमें उसमें अपनी पहचान को उत्पन्न और स्थापित करता है।